श्री अरविंद का राष्ट्रवादी राजनीतिक चिंतन एवं वर्तमान प्रासंगिकता : एक गहन चिंतन

जेठूराम [1]

[1] **अतिथि व्याख्याता विद्या सम्बल योजनान्तर्गत (vsy), राजकीय कन्या महाविद्यालय बडा गुडा (सोजत सिटी) पाली (राजस्थान).**

ABSTRACT:

महान भारतीय दार्शनिक श्री अरविंद घोष जो, श्रीअरविंदो के नाम से भी जाने जाते हैं एक योगी, महर्षि और राष्ट्रवादी नायक के रूप में प्रसिद्धि को प्राप्त करते रहे हैं। यह ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ़, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के भीतर, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कट्टरपंथी गुट के सबसे प्रमुख नेताओं में से एक, भारतीय स्वतंत्रता के संघर्ष में अहम भूमिका निभाने वाले एक महान राष्ट्र नायक रहे हैं। श्री अरविंद घोष भारत की सांस्कृतिक, आध्यात्मिक विरासत के विचारों से संयुक्त होकर राष्ट्रवाद में एक बड़ी भूमिका का निर्वहन करते हैं। उनके मत में आध्यात्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों की प्राप्ति और राष्ट्र के विकास का चिंतन उतना ही महत्वपूर्ण रहा है जितना कि राजनीतिक स्वतंत्रता की बहाली और सकारात्मक कायाकल्प।

श्री अरविंद घोष ने भारत के स्वतंत्र और आत्मनिर्भर होने की आवश्यकताओं पर अत्यधिक बल दिया। उनका वैचारिक दृष्टिकोण भारत के स्वदेशी उद्योग, शिक्षा प्रणाली और शासन प्रणाली को विकसित करने, मानव जाति की प्रगति में योगदान देने के लिए, अपने स्वयं के मार्ग को तैयार करने में सक्षमता पर था। इसमें कोई संदेह नहीं है कि उनकी राष्ट्रवादी दृष्टि समग्र दृष्टिकोण, संकीर्ण राजनीतिक लक्ष्यों से परे, समाज के उत्थान, परिवर्तन और नवाचार पर केंद्रित थीं।

श्री अरविंद की दृष्टि से राष्ट्रवादी राजनीतिक चिंतन किसी आंदोलन तक ही सीमित नहीं है वरन बह आस्था का विषय है, मनुष्य का धर्म है, जिसमें जीवन मूल्यों, नैतिक आदर्शों और सात्विक गुणों की प्रासंगिकता आज भी उतना ही महत्त्व रखती है जितना कि वैदिक काल में रखती थी। वैदिककालीन राजनीति राष्ट्रवादी दृष्टिकोण से युक्त थी। लेकिन इसी के साथ साथ नैतिकता, जीवन मूल्य एवं आदर्शों से भी मंडित थी। यही कारण था कि, उस समय की राजनीति आध्यात्मिक धरातल पर विराजमान होने के कारण संपूर्ण सामाजिक शासन व्यवस्था को सुव्यवस्थित स्वरूप देने वाली थी जिसकी प्रासंगिकता वर्तमान समय में अविस्मरणीय हैं।

KEYWORDS:

अरविंद, राष्ट्रवादी, राजनीतिक, चिंतन, वर्तमान, प्रासंगिकता, मूल्य, नैतिक, आदर्श, वैचारिक, स्वदेशी।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
12th April 2024	15th April 2024

प्रस्तावना:-

राजनीति- दर्शन, समाज-दर्शन और इतिहास-दर्शन में श्री अरविन्द ने कहीं भी किसी भी प्रवृत्ति का एकदम खंडन नहीं किया है। उन्होंने सर्वत्र उस प्रवृत्ति के मूल में छिपे सत्य का अनावरण करने का प्रयास किया है और यह दिखलाया है कि उस प्रवृत्ति के माध्यम से सत्य की अभिव्यक्ति की क्या सीमाएं थीं? और इन सीमाओं को हटाकर अभिव्यक्ति के आगे बढ़ाने के लिए क्या किया जाना चाहिए? अस्तु, श्री अरविन्द ने सैनिक समष्टिवाद के रूप में जर्मनी के उदय को एक अपरिष्कृत और बर्बर रूप में राष्ट्रीय आत्मा की अभिव्यक्ति माना है। जिस प्रकार व्यक्ति के जीवन में अहंकार को आत्मा मान लिया जाता है उसी प्रकार राष्ट्रीय अहम् को बहुधा भूल से आत्मा समझ लिया बाता है। जैसे- व्यक्ति का अहम् दूसरों की परवाह न करके बल्कि उनकी कीमत पर आगे बढ़ना चाहता है उसी प्रकार संकीर्ण अहमवादी राष्ट्र अन्य राष्ट्रों की कीमत पर अपना विस्तार करना चाहते हैं।

मूल सत्य यह है कि, व्यक्तियों और राष्ट्र सभी को आत्म साक्षात्कार करना चाहिए। यह आत्मा अहम नहीं है आत्मा को अहम मानकर चलने से व्यक्तियों और राष्ट्रों ने जो गलत दिशा की ओर कदम रखे हैं उनके आधार पर आत्म साक्षात्कार को अनुचित नहीं ठहराया जा सकता बल्कि इससे उसके महत्व को और अधिक स्पष्टता प्राप्त होती है। वास्तव में परमात्मा ब्रह्म सत्य का केवल एक पहलू है दूसरा उतना ही अधिक महत्वपूर्ण पहलू है। राष्ट्र को जहां अपनी आत्मा को प्राप्त करना है वहां अन्य व्यक्तियों और अन्य राष्ट्रों में अवस्थित आत्मा का सम्मान करना भी सीखना है और आध्यात्मिक विकास में सब व्यक्तियों और राष्ट्रों को एक दूसरे की सहायता करनी चाहिए। यही एक राष्ट्रवादी राजनीतिक चिंतन का धरातल है।

श्री अरविंद घोष के मत में राष्ट्रवाद एक धर्म

श्री अरविंद ने राष्ट्रवाद को एक ईश्वर विरचित धर्म कहा है जिसके सहारे प्रत्येक राष्ट्र उन्नति और विकास को प्राप्त होते हैं। उन्होंने घोषणा की कि, राष्ट्रीयता को कभी भी दबाया नहीं जा सकता, वह तो एक ईश्वरीय शक्ति है, जिसकी सहायता से हम विश्व में उन्नति, प्रगति और सक्षमता को प्राप्त करते हैं। राष्ट्रीयता अथवा राष्ट्रवाद अमर और अजर हैं। यह कोई मानवीय वस्तु नहीं, प्रत्यक्ष ईश्वर है। अतएव श्री अरविन्द ने अपने राष्ट्रवाद को ईश्वरीय प्रेरणा से जोड़कर राजनीति में एक नए आयाम का श्रीगणेश किया है।

श्री अरविन्द का राजनैतिक चिंतन जितना राष्ट्रवादी हैं उतना ही आध्यात्मिक भी हैं। उन्होंने संपूर्ण राजनीतिक धरातल को आध्यात्मिक नज़रिए से देखा है, परखा है और समझा है। श्री अरविन्द ने अपने आध्यात्मिक नज़रिए से राजनीतिक चिंतन करते हुए राष्ट्र के विभिन्न अंगों को पूर्णतः तथा परिपक्वता के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। उनके मत में स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए मानवीय मूल्यों का होना अति आवश्यक है। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान भी 1893 से 1910 तक श्री अरविन्द का सराहनीय आध्यात्मिक योगदान अपने राष्ट्र के प्रति रहा है।

श्री अरविन्द की राष्ट्र संबंधी अवधारणा 'वंदे मातरम्' मंत्र से स्पष्ट होती हैं। उनके लिए राष्ट्र कोई भू क्षेत्र, कोई भौतिक प्रदेश अथवा बौद्धिक प्रयत्न मात्र नहीं था बल्कि वे भारत भूमि को हृदय से माता मानते थे। जिसने हजारों वर्षों से अपनी संतान का पालन पोषण किया है। जो मात्र शक्ति है तथा जो सब के लिए पूजनीय है। देश की पराधीनता को भी श्री अरविंद ने 'माता' को विदेशियों द्वारा पददलित किए जाने के रूप में ही वर्णित किया है। इस रूप में उनकी समस्त भावनाएँ अपने राष्ट्र के प्रति सत्यता से, समर्पित भाव से युक्त रही हैं। वह राष्ट्र को किसी खंड के रूप में न देखकर एक भव के रूप में देखते हैं और भावनाओं का गठन सत्यता से, सौम्यता से, करुणा से ही संभव है। उन्होंने अपने देश को आजाद कराने के लिए भी बंगाल में युवकों के संगठन की 'भवानी मंदिर योजना' बनाई थी। इस समय के उनके लेखों तथा भाषणों से स्पष्ट होता है कि, उन्होंने किस प्रकार राष्ट्रवाद को धर्म से संयुक्त करने का प्रयास किया, वह अतुलित था जो लोग यूरोपीय चिंतन से प्रभावित थे वे शक्ति प्राप्त करने के प्राचीन तरीकों पर संदेह करने लगते थे। वे इन मौलिक बातों पर विचार नहीं करते।

लेकिन जो अपने देश के प्रति सच्ची भावना से, प्रेम से, स्नेह से युक्त है, जो अपने देश को अपना कर्म और धर्म मानते हैं उनके लिए देश के प्रति आध्यात्मिक भावनाएँ सर्वोपरि हैं।

अरविन्द के राष्ट्रवादी चिंतन में निहित वैदिक भाव

अरविंद को राष्ट्रीय एकता का प्राण-सूत्र वैदिक मंत्रों से प्राप्त होता है। ऋग्वेद का उद्घोष है कि वरूण राष्ट्र को स्थिर करें, अर्थात् अच्छी जलवृष्टि हो, जिससे राष्ट्रीय धरा सब प्रकार के अन्नों से भरी-पूरी हो। वृहस्पति राष्ट्र का ध्रुवीकरण करें, अर्थात् राष्ट्र के सभी मानव ज्ञानैश्वर्य से परिपूर्ण हो। इंद्र राष्ट्र को सुदृढ़ करें, अर्थात् राष्ट्रीय चेतना बलवती हो और अग्निदेव राष्ट्र को दृढ़ता से धारण करें। राष्ट्र के प्रति जनता का यह पवित्र भाव राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है।

एक मत से मातृभूमि के प्रति सजग रहना भी राष्ट्रीय एकता का नियम है। राष्ट्रीय एकता का पोषक वह व्यक्ति ही बन सकता है जो अपनी मातृभूमि के प्रति कर्तव्यपरायण हो। आर्य मातृभूमि के प्रति बड़े ही कर्तव्यनिष्ठ होते थे और यही कारण है कि उनकी राष्ट्रीय एकता सब प्रकार से अक्षुण्ण थीं।

अथर्ववेद की ऋचाओं में मातृभूमि के प्रति अपने कर्तव्यों की घोषणा राष्ट्रीय एकता का पवित्र संकल्प यह है कि "मैं अपनी मातृभूमि के लिए और उसके दु:ख को दूर करने के लिए सब प्रकार से कष्ट सहने को तैयार हूँ। वे कष्ट चाहे जिस ओर से और चाहे जिस समय में आवें, चिंता नहीं। मैं अपनी मातृभूमि के संबंध में जो भी कहता हूँ, वह उसकी भलाई के लिए ही है। मैं ज्योतिपूर्ण विद्वान और बुद्धियुक्त होकर मातृभूमि का शोषण करने वाले शत्रुओं का विनाश करता हूं।

तत्कालीन वैदिक समाज की इन भावनाओं के आधार पर ही राष्ट्रीय एकता सब प्रकार से सुदृढ़ और सशक्त थी। ये भावनाएँ आज भी स्थायी राष्ट्रीय एकता की नींव हो सकती है। वैदिक कालीन शिक्षा व्यवस्था में राष्ट्रीय एकता से जुड़े विषयों का शिक्षण बहुत उपयोगी रहा। राष्ट्रीय एकता के सिद्धांत शिक्षा के प्रमुख अंग थे। यथा-

समानी पूपा सहवोऽत्र भागः।

समानोयोक्त्रे सह वो युनज्मि॥

ये समस्त वैदिक भावनाएँ श्री अरविंद के राष्ट्रीय चिंतन और राजनैतिक धरातल का आधार थीं। इन सभी भावनाओं से ओतप्रोत होकर उन्होंने अपने राष्ट्रवादी चिंतन को आकार प्रकार प्रदान किया और अपनी कल्पना के रूप में इसी संस्कृति के साथ राजनीतिक धरातल को देखने के लिए विभिन्न प्रयास किए।

अरविंद के मत में प्रमुख राजनीतिक विचार

राजनीतिक दार्शनिक के रूप में श्री अरविन्द ने इतिहास में आध्यात्मिक नियतिवाद के सिद्धांत को स्वीकार किया है। उनका कहना था कि इतिहस की ऊपर से निष्प्रयोज्य और प्रायः परस्पर विरोधी प्रतीत होने वाली घटनाओं के मूल में ईश्वर की शक्तियाँ ही काम कर रही है। इतिहास ब्रह्म की क्रमिक पुनराभिव्यक्ति है। अरविन्द काली को परमात्मा की नियामक शक्ति का प्रतीक मानते थे। उनके अनुसार काली का गतिशील क्रियाकलाप ही इतिहास है।

विपिनचन्द्र पाल की भांति श्री अरविन्द को भी भारतीय पुनरुत्थान के मूल में ईश्वर की इच्छा दिखायी दी। एक रहस्यवादी की भांति उन्होंने घोषणा की कि, भारतीय राष्ट्रवाद के मूल में ईश्वर है और वही आन्दोलन का वास्तविक नेता है। उन्होंने बताया कि ब्रिटिश अधिकारी भारतीय जनता का जो दमन, उत्पीड़न और अपमान कर रहे हैं वह भी ईश्वरीय योजना का ही अंग है। ईश्वर भारतीयों को आत्म निग्रह की शिक्षा देने के लिए स्वयं इन तरीकों का प्रयोग कर रहा है। फ्रांस की क्रांति भी ईश्वर की इच्छा का ही परिणाम थी। जब तक क्रान्ति के नेताओं-मिराओं, दांते, रोबिसपियर, नेपोलियन आदि ने अपने कार्यकलापों में दुर्गास्वरूपा काली की इच्छा (युग की आत्मा) को व्यक्त किया तब तक उसने उन्हें करने दिया, किन्तु जैसे ही वे अहंकार से प्रेरित होकर अपनी महत्वाकांक्षओं की पूर्ति में लग गये वैसे ही उसने उन्हें इतिहास के मंच से उठाकर फेंक दिया। इस प्रकार दैवी न्यायवाद (दैवी न्याय का सिद्धांत) भगवत गीता के विचारों तथा जर्मन प्रत्ययवाद के समन्वय का प्रतीक है। इसी को हीगल ने इतिहास का औचित्य कहा है।

श्री अरविन्द के राजनीतिक विचार सबसे अलग थे। उनकी राजनीति एक योगी पुरुष की राजनीति थी। वह राजनीतिज्ञ नहीं थे, लेकिन राजनीतिक चिंतन की सुदृढ़ता का आधार उनके आध्यात्मिक विश्वास में निहित था। अरविन्द ने जो अनुभूति की उसमें आध्यात्मिक शक्ति, योग साधनाएं, नैतिक मूल्य, जीवन आदर्श, ईश्वर इच्छा से गति करना आदि भाव निहित थे।

अरविन्द के लिए भारत की स्वाधीनता का अर्थ कोरी राजनीतिक स्वाधीनता नहीं वरन आत्मिक स्वतंत्रता था। भारत का लक्ष्य मानव जाति को आध्यात्मिक नेतृत्व प्रदान करना था ताकि भारत के कण कण में आध्यात्मिकता का वास हो सके। प्रत्येक जनमानस मानवीय मूल्यों से सुशोभित हो, प्रत्येक बालक का हृदय कोमल सत्य भावनाओं से भरा हो। जन जन का मन और आत्मा प्रकाश से भरा हुआ हो। मानव जाति का पथ प्रदर्शक बनने में ईश्वरीय संदेश सहायक हो अतः उनके विचारों में जो उदारता, श्रेष्ठता, उच्चता विद्यमान थी उन सबके मिलने पर उनका दार्शनिक चिंतन जो कोरी आध्यात्मिकता पर स्थापित था राजनीति का एक धरातल था।

अरविन्द का विश्वास था कि, भारत में सदैव आध्यात्मिक विचारों की गंगा प्रवाहित होती रहे। जिनकी दीर्घ और गहन परंपरा है। जो मानव मन को सही दिशा दशा व लक्ष्य प्रदान करती है। अरविन्द भारत की राष्ट्रीय स्वतंत्रता की कामना केवल भारत के हित की दृष्टि से नहीं करते थे बल्कि स्वतंत्रता की कामना में उनका वास्तविक चिंतन संसार में आध्यात्मिक पुनरुद्धार करना था। प्रत्येक हृदय को सच्चा योगी बनाना था, वह मानवता के पथ, पर अग्रसर करना था।

अरविन्द ने राष्ट्रीय आंदोलन की ज्वाला से निकलकर भी भारत के स्वाधीनता संग्राम से मुख नहीं हो रहा है वस्तुतः भारत के लक्ष्य को भौतिक साधनों द्वारा प्राप्त करने का भार उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन को अन्य नेताओं पर छोड़ दिए थे और अपने पर आध्यात्मिक साधनों द्वारा हम लक्ष्मी को पूरा करने का बोझा वहन किया था।

श्री अरविन्द का राजनैतिक दार्शनिक चिंतन

अरविन्द के राजनीतिक विचारों का मूल आधार उनकी आध्यात्मिक आस्था है। राजनीति के आध्यात्मीकरण का प्रयास उनकी अन्तःकरण की प्रेरणा से उत्पन्न हुआ। उनके विचारों को विवेक के माध्यम से अथवा वैज्ञानिक कसौटी से नहीं परखा जा सकता। इसके लिए आस्था एवं श्रद्धा की आवश्यकता है। वे यूरोप की बौद्धिक प्रगति को भारत की आध्यात्मिक चेतना में सम्मिश्रित करना चाहते है। परब्रह्म को जगत के साथ, जीवन को आत्मा के साथ, रहस्यवाद को राजनीतिक स्वतंत्रता एवं सामाजिक गत्यात्मकता के मूल्यों से जोड़ दिया।

डॉ. कर्णसिंह ने अपनी पुस्तक The Prophet of Indian Nationalism में लिखा है- "श्री अरविन्द के राजनीतिक चिन्तन का दृढ़ आधार उनके गहरे आध्यात्मिक विश्वासों में था और उन्हीं में से उनका विकास हुआ। उनके लिए राजनीति उनके वैयक्तिक, राष्ट्रीय तथा वैश्विक आध्यात्मिक विकास के सिद्धांत का एक विस्तरण ही थी।"

श्री अरविन्द के शब्दों में, "एक एकीकरण करने वाला तथा समन्वयकारी ज्ञान ही मार्गदर्शन कर सकता है, परन्तु वह ज्ञान हमारे सत्य के एक गहरे तत्व में होता है जिसके लिये एकता तथा संश्लिष्टता स्वाभाविक होते हैं। उसी को अपने में पाकर ही हम अपने अस्तित्व की समस्या को सुलझा सकते हैं तथा उसी के द्वारा व्यक्तिगत तथा समूहगत जीवन के सच्चे मार्ग दर्शन की समस्या को सुलझाया जा सकता है।"

प्रकृति के विकास में जब कभी किसी नए स्तर का अवतरण होता है तो वह सबसे पहले कुछ थोड़े से व्यक्तियों में स्थान बनाता है, उन्हीं में विकसित होता है, शेष सब कम से कम समय तक ज्यों के त्यों रहते हैं। अब यदि इस सीमित केंद्र की शक्ति बढ़ती गई तो क्रमशः अन्य लोगों का विकास होता है और समूह के स्तर पर विकास का नया सोपान दिखलाई पड़ता है किंतु कभी-कभी यह केंद्र इतना अधिक शक्तिशाली नहीं बन पाता और बाकी लोगों के प्रभाव से क्रमशः समाप्त हो जाता है।

श्री अरविन्द ने मानव-समाज के सोपानों का मनोवैज्ञानिक दृष्टि से विश्लेषण किया है, क्योंकि आखिरकार समाज का विकास मानवों का ही सामूहिक विकास की और मानव का विकास मनोवैज्ञानिक विकास है। इस प्रकार व्यक्ति और समूह बुद्धि से निम्न स्थिति से बौद्धिक स्थिति तक पहुंचते हैं और यदि विकास प्रकृति का नियम है तो जैसे वे निम्न स्तर से बौद्धिक स्तर पर भी पहुंचे हैं वैसे ही बौद्धिक स्तर से अति बौद्धिक स्तर पर भी पहुंचेगा। मानव के भविष्य के विषय में श्री अरविन्द के विचार इसी तर्क पर आधारित हैं।

व्यक्तिवादी दृष्टिकोण से समाज का ऊँचा या नीचा स्तर इस बात से जाना जाता है कि उसमें व्यक्ति के विचारों, क्रियाओं, वृद्धि और विकास के लिए कहां तक स्वतंत्रता दी जाती है और कहां तक साधन जुटाए जाते हैं। जिस समाज में व्यक्ति को विचारों, क्रियाओं और विकास की जितनी अधिक स्वतंत्रता दी जाती है उसका स्तर उतना ही ऊँचा है। दूसरी और जिस समाज में वह स्वतंत्रता नहीं होती वहां अन्य दृष्टिकोण से कितनी भी अधिक समृद्धि,

कुशलता या अन्य गुण क्यों न पाया जाता हो, व्यक्तिवादी दृष्टिकोण से उसका स्तर निम्न है।

इस व्यक्तिवादी दृष्टिकोण को आधुनिक जनतंत्र में स्थान दिया गया है। जनतंत्रीय विचारधारा के अनुसार सरकार का निर्णय और समाज की व्यवस्था करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति में समान बुद्धि और संकल्प पाए जाते हैं। इस प्रकार व्यक्तिवादी बुद्धिवादी व्यक्तिवादी जनतंत्र के आदर्श पर पहुंचता है क्योंकि जनतंत्र वह समाज है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को अन्य के समान माने जाने का अवसर मिलता है।

अस्तु, व्यक्तिवादी विवेक समानता का समर्थन करता है। अरस्तु ने समानता को न्याय का आधार कहा था। मनुष्य स्वभावतः ही स्वतंत्र और समान हैं। यद्यपि मनुष्यों में कुछ शारीरिक अथवा मानसिक दृष्टि से दूसरों से अधिक बलवान हो सकते हैं किंतु यह अथवा कोई भी अन्य अंतर इतना अधिक नहीं है कि उससे मनुष्यों की समानता के सिद्धांत का अतिक्रमण होता हो।

अरविंद के राष्ट्रवादी राजनीतिक चिंतन की वर्तमान प्रासंगिकता

श्री अरविन्द के अनुसार विवेक और विज्ञान जीवन को आगे नहीं बढ़ा सकते क्योंकि उनमें गतिशीलता नहीं है बल्कि वहां कहीं उनकी छाप लगती है, वहां जीवन गतिहीन हो जाता है, जो गति दिखलाई भी पड़ती है वह कृत्रिम और यंत्रवत् होती है। समग्र सत् की समग्र गति विवेक और विज्ञान के आधार पर प्राप्त नहीं की जा सकती। इनके लिए विवेक और बुद्धि से ऊँचा उठना पड़ेगा।

किंतु यह अति बौद्धिक तत्व भी व्यक्तियों के द्वारा ही अवतरित होगा। किसी भी समुदाय के विकास से पूर्व उसमें कुछ व्यक्तियों का ही विकास होता है और ये ही व्यक्ति सामाजिक विकास के अग्रदूत होते हैं। अस्तु, व्यक्ति समष्टि की इकाई मात्र नहीं है। वह उससे अधिक है।

श्री अरविन्द के शब्दों में, “आत्मा या सत् के रूप में व्यक्ति अपनी मानवता में सीमित नहीं है, वह मानव से कम रहा है और वह मानव से अधिक बन सकता है।“ अपने व्यक्तित्व के विकस के लिए मनुष्य अवश्य समाज पर निर्भर होता है किंतु उसकी भावी संभावनाएं उसके सामाजिक विकास से प्राप्त नहीं होंगी। इसके लिए उसे आत्मविकास करना होगा। यह आत्मविकास उसके अंदर उस निरपेक्ष सत्य का विकास है जो कि समस्त विश्व का भी अतिक्रमण करता है। इस प्रकार श्री अरविन्द के राजनीति-दर्शन में व्यक्ति को अत्यधिक महत्व दिया गया है।

वर्तमान समय श्री अरविन्द के विचारों की प्रासंगिकता की अपेक्षा करता है। आज राजनीति जहाँ जीवन मूल्यों, नैतिक आदर्श, चारित्रिक गुणों से रहित हो चुकी है। उसे पुनः वैदिक संस्कृति से जोड़ने के लिए हमें श्रीअरविन्द के विचारों की ओर लौटना होगा। क्योंकि उनके विचारों की आध्यात्मिकता, रहस्यवादिता ही भविष्य को स्वर्णिम सोपान देने में सक्षम है। उनके विचारों में निहित यौगिक साधनाएं, आत्मा की स्थिरता से लेकर वैज्ञानिक स्थिरता के ज्ञान से जुड़ी हुई है। आज मानव मन को सुख शांति और सौहार्द देने के लिए अरविंद के विचार अत्यधिक प्रासंगिक है।

निष्कर्ष:-

अंत में कहा जा सकता है। श्री अरविन्द पृथ्वी को प्रकाशमान भविष्य देने के लिए आए थे। उन्होंने अपने स्थूल शरीर में अतिमानस के प्रकाश को उतारा और इसके द्वारा मानव-प्रकृति के दिव्य रूपान्तरण के मार्ग का शोध किया। अंधकार की ओर बढ़ रहे मानव को उन्होंने नया प्रकाश दिया। उन्होंने अपनी उच्च साधना के द्वारा मानव मन का परम चेतना से तादात्म्य करा दिया। श्रीअरविन्द ने हमें बताया कि जीवन भ्रम या धोखा नहीं है। सृष्टि का यह अनबूझ व्यापार दुःखमय, भ्रम या धोखा लगता है, तो इसका कारण है कि हम परमात्मा की सर्वोच्च सत्ता तक पहुँचने की संभावनाओं वाले पथिक हैं, किन्तु पहुंच नहीं पाते हैं। “निर्जीव जड़ में जो चेतना सोयी हुई है, वही पशुओं में स्वप्नाविष्ट और मनुष्यों में अहंकार विमूढ़ मन की खंड ज्योति के सहारे सुख का उपाय ढूंढ रही है।“ हमारी मृत्युलांछित देहपुरी मे जो बसा हुआ है वह विजरो विमृत्यु है, यह हम अपनी चेतना के गोधूलि-पथ से चलते हुए भी जान सकते हैं। लेकिन जीवन का बाहरी परिवेश अब भी क्लेश-क्लिष्ट तथा मृत्युच्छाया-कवलित है। हमारे अंतर का देवता रत्नदीप बनकर जीवन के गर्भगृह में है।

REFERENCES

1. घोष, श्री अरविन्द: मानव एकता का आदर्श- युद्ध और आत्म निर्णय' अनुवादिका लीलावती इन्द्रसेन, श्री अरविन्द सोसायटी पाण्डिचेरी 1957.

2. घोष, श्री अरविन्द: भारतीय संस्कृति के आधार, श्री अरविन्द सोसाइटी, पाण्डिचेरी, 1967.

3. कर्ण सिंह : भारतीय राष्ट्रीयता के अग्रदूत- श्री अरविन्द के राष्ट्रवादी विचारों का एक अध्ययन, थामसन प्रेस इण्डिया लि० प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, 1970

4. शर्मा, गोविन्द प्रसाद: भारतीय राजनीतिक चिन्तन, मध्य प्रदेश ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 1984.

5. इकबाल नारायण: राजनीतिशास्त्र में मूल सिद्धांत, रतन प्रकाशन मन्दिर, महात्मा गांधी मार्ग, आगरा-2, 1993.

6. गावा, ओ.पी.: समकालीन राजनीतिक सिद्धान्त मयूर पेपर बैक्स, नोएडा, उ०प्र०, 1996.

7. बरमानी, रमेश चन्द्र: ‘आधुनिक राष्ट्र का उदय एवं विकास, सम्पादक- ज्ञान सिंह संधु, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली 1999.

8. चन्द्रा, विपिन : आधुनिक भारत में विचारधारा एवं राजनीति, अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्री ब्यूटर्स प्रा०लि०, नई दिल्ली, 2001.

9. परुथी, डॉ० आर०के०: 'आधुनिक भारत, राष्ट्रवादी साहित्य एवं क्रान्तिकारी आन्दोलन अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2005.

10. मेहता, जीवन: 'राजनीतिक चिन्तन का इतिहास', साहित्य भवन, हास्पिटल रोड, आगरा, 2008.